NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

गाँधी और समसामयिक विश्व

(Gandhi and the Contemporary World)

B.P.S.E.- 141

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Kusam Kumari*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

गाँधी और समसामयिक विश्व

(Gandhi and the Contemporary World)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

गाँधी : एक परिचय (Introduction)

1. गाँधी : जीवन और काल 1
(Gandhi: Life and Times)

2. गाँधी की आधुनिक सभ्यता और वैकल्पिक आधुनिकता की अवधारणा 21
(Gandhi's Conception of Modern Civilisation and Alternative Modernity)

3. गाँधी : विकास समीक्षक 31
(Gandhi's Critique of Development)

गांधी का राजनीतिक चिंतन और विचार (Gandhi's Political Concerns and Ideas)

4. स्वराज (Swaraj) 43

5. स्वदेशी (Swadeshi) 55

6. सत्याग्रह (Satyagraha) 66

7. न्यास (ट्रस्टीशिप) (Trusteeship) 78

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

गाँधी की विरासत (Gandhi's Legacies)

8. अहिंसक आंदोलन (Non-Violent Movements) 88

9. शांति आंदोलन (Pacifist Movements) 100

10. महिला आंदोलन (Women's Movements) 110

11. पर्यावरण आंदोलन (Environmental Movements) 122

गाँधी और समकालीन चुनौतियाँ (Gandhi and Contemporary Challenges)

12. सामाजिक सद्भाव (Social Harmony) 134

13. शिक्षा (Education) 144

14. सदाचार और नैतिकता (Ethics and Morality) 156

■ ■

Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

गाँधी और समसामयिक विश्व

B.P.S.E.-141

(Gandhi and the Contemporary World)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

NEERAJ PUBLICATIONS

भाग-I

प्रश्न 1. महात्मा गांधी के प्रारंभिक जीवन के अनुभवों ने उनकी बाद की सक्रियता को कैसे रूप दिया?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-4, प्रश्न 1

प्रश्न 2. स्वराज के सार और उसके व्यावहारिक निहितार्थों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-45, प्रश्न 1

प्रश्न 3. आधुनिक सभ्यता के विरुद्ध गांधीजी के तर्कों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-23, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) ट्रस्टीशिप

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-79, प्रश्न 1

(ख) भूदान आंदोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-92, प्रश्न 4, 'भूदान आंदोलन'

भाग-II

प्रश्न 5. स्वदेशी पर गांधी जी के विचारों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-57, प्रश्न 1

प्रश्न 6. विकास और पर्यावरण पर गांधीजी के विचारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-124, प्रश्न 1

प्रश्न 7. भारत के बाहर सत्याग्रह की विरासत का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-71, प्रश्न 4

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) शाहबानो केस

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-117, 'शाहबानो केस'

(ख) लियो टॉल्स्टॉय

उत्तर–लेव निकोलायेविच तोलस्तोय का जन्म मास्को से लगभग 100 मील दक्षिण पैत्रिक रियासत यास्नाया पोल्याना में हुआ था। इनकी माता पिता का देहांत इनके बचपन में ही हो गया था, अतः लालन पालन इनकी चाची तत्याना ने किया। उच्चवर्गीय ताल्लुकेदारों की भाँति इनकी शिक्षा के दीक्षा के लिये सुदक्ष विद्वान् नियुक्त थे। घुड़सवारी, शिकार, नाच-गान, ताश के खेल आदि विद्याओं और कलाओं की शिक्षा इन्हें बचपन में ही मिल चुकी थी। चाची तात्याना इन्हें आदर्श ताल्लुकेदारों बनाना चाहती थी।

1844 में टॉलस्टॉय कजान विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुए और 1847 तक उन्होनें पौर्वात्य भाषाओं (eastern languages) और विधिसंहिताओं (कानून) का अध्ययन किया। रियासत के बँटवारे का प्रश्न उपस्थित हो जाने के कारण स्नातक हुए बिना ही इन्हें विश्वविद्यालय छोड़ देना पड़ा। रियासत में आकर इन्होंने अपने कृषक असामियों की दशा में सुधार करने के प्रयत्न किए और सुविधापूर्वक उन्हें स्वतंत्र भूस्वामी हो जाने के लिये कतिपय शर्तें उपस्थित कीं, परंतु असामी वर्ग आसन्न स्वतंत्रता की अफवाहों से प्रभावित था, अतः उसने टॉलस्टॉय की शर्तें ठुकरा दीं। पर यह अफवाह अफवाह ही रही और अंततः कृषकों को पश्चाताप करना पड़ा। उनकी कहानी 'ए लैंड औनर्स मोर्निंग' (1856) इसी घटना पर आधृत है।

1851 में टॉलस्टॉय कुछ समय के लिये सेना में भी प्रविष्ट हुए थे। उनकी नियुक्ति कोकेशस में पर्वतीय कबीलों से होने वाली दीर्घकालीन लड़ाई में हुई, जहाँ अवकाश का समय वे लिखने-पढ़ने में लगाते रहे। यहीं पर उनकी प्रथम रचना 'चाइल्डहुड' 1852 में निर्मित हुई, जो 'एल.टी.' के नाम से 'टि कंटेंपोरेरी' नामक पत्र में प्रकाशित हुई। उस रोमांटिक युग में भी इस नीरस यथार्थवादी ढंग की रचना ने लोगों को आकृष्ट किया और उसके रचनाकार के नाम के संबंध में तत्कालीन साहित्यिक तरह तरह के अटकल लगाने लगे थे।

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

गाँधी और समसामयिक विश्व

(Gandhi and the Contemporary World)

B.P.S.E.-141

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड - I

प्रश्न 1. सत्याग्रह की अवधारणा और इसकी समकालीन प्रासंगिकता की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-66, 'सत्याग्रह की अवधारणा' तथा पृष्ठ-72, प्रश्न 5

प्रश्न 2. पर्यावरणीय आन्दोलनों पर गांधी के विचारों के प्रभाव का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-124, प्रश्न 1

प्रश्न 3. सद्भाव पर गांधी के विचारों और इसे बढ़ावा देने के तरीकों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-139, प्रश्न 5 तथा पृष्ठ-138, प्रश्न 4

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(अ) जल संरक्षण आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-123, 'जल संरक्षण आंदोलन, 2000'

(ब) राज्य विनियमित ट्रस्टीशिप

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-81, प्रश्न 4

भाग - II

प्रश्न 5. सतत् विकास की संकल्पना और वर्तमान विश्व में इसके महत्त्व की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-38, प्रश्न 1 तथा पृष्ठ-40, प्रश्न 4

प्रश्न 6. शांतिवाद को परिभाषित कीजिए और आधुनिक विश्व में इसकी प्रासंगिकता का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-100, 'शांतिवाद क्या है?' तथा पृष्ठ-106, प्रश्न 1

प्रश्न 7. नैतिकता और सदाचार की गांधीजी की अवधारणाओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-157, प्रश्न 1

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(अ) नर्मदा बचाओ आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-111, 'नर्मदा बचाओ आंदोलन'

(ब) गुलाबी गैंग

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-119, प्रश्न 2

■■

NEERAJ PUBLICATIONS

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

गाँधी और समसामयिक विश्व
(Gandhi and the Contemporary World)

गाँधी : एक परिचय
(Introduction)

गाँधी : जीवन और काल
(Gandhi: Life and Times)

1

परिचय

महात्मा गाँधी को 'राष्ट्रपिता' कहा जाता है। 2 अक्टूबर 1869 को मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म हुआ, गाँधीजी का भारत की स्वतंत्रता में महत्त्वपूर्ण योगदान था। गाँधीजी सदा अहिंसा के रास्ते पर चलते थे और लोगों से भी आशा करते थे कि वे भी अहिसा का रास्ता अपनायें। ब्रिटिश शासन से भारत की स्वतंत्रता के लिए गाँधीजी ने अहिंसक प्रतिरोध का इस्तेमाल किया था। भारत में महात्मा गाँधीजी को कोई उन्हें महात्मा, महान आत्मा और कुछ उन्हें बापू के नाम से जानते हैं। गाँधीजी ने भारतीय जनता को ब्रिटिश उपनिवेशवाद की बेड़ियों से आजाद करवाया था। गाँधीजी हर किसी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। महात्मा गाँधी के महान विचारों से देश का हर व्यक्ति प्रभावित है।

अध्याय का विहंगावलोकन

बचपन

मोहनदास करमचंद गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को भारत के गुजरात राज्य के पोरबंदर क्षेत्र में हुआ था। उनके पिताजी श्री करमचंद गाँधी पोरबंदर के 'दीवान' थे और उनकी माता पुतलीबाई एक धार्मिक महिला थीं, जिसका प्रभाव युवा मोहनदास पर पड़ा और इन्हीं मूल्यों ने आगे चलकर उनके जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। महात्मा गाँधी का परिवार वैष्णव मत को मानने वाला परिवार था और उन पर जैन धर्म का भी गहरा प्रभाव रहा। यही कारण था कि उन्होंने अहिंसा, आत्मशुद्धि और शाकाहार को अपने जीवन में उतारा था।

महात्मा गाँधी शिक्षा के दृष्टिकोण से एक औसत दर्जे के विद्यार्थी रहे, लेकिन समय-समय पर उन्हें कई पुरस्कार और छात्रवृत्तियाँ भी मिलीं। महात्मा गाँधी का विवाह मात्र 13 वर्ष की आयु में ही कर दिया गया था। जब वे स्कूल में पढ़ते थे, तभी पोरबंदर के एक व्यापारी की पुत्री कस्तूरबा बाई से उनका विवाह हुआ।

मोहनदास गाँधी ने अपने बचपन के शुरुआती दिन पोरबंदर में व्यतीत किए। बाद में उनके पिता राजकोट के कोर्ट के सदस्य बन गये। मोहनदास भी अपने परिवार के साथ राजकोट चले गए। राजकोट में गाँधीजी ने हाई स्कूल पास किया और 1888 में उन्होंने भावनगर के सामलदास कॉलेज में दाखिला लिया और यहाँ से डिग्री प्राप्त की।

अपनी युवावस्था में गाँधीजी बहुत शर्मीले थे। वह समय से स्कूल पहुँचते और स्कूल बंद होने के तुरंत बाद घर वापस आ जाते थे। गाँधीजी अपने माता-पिता की सेवा, घर के कार्यों में हाथ बँटाना, आज्ञा का पालन करना, सैर पर जाना तथा समुद्र के किनारे खेलना पसंद करते थे। गाँधीजी ने जीवन के विद्रोही समय में गुप्त नास्तिकवाद को भी अपनाया, धूम्रपान किया और मांसाहार का भी सेवन किया। गाँधीजी ने घरेलू नौकरों के पैसे चोरी किए, लेकिन उसके बाद उन्होंने इन सभी चीजों को जीवन में कभी न दोहराने का दृढ़ निश्चय कर फिर कभी नहीं दोहराया।

गाँधीजी का सपना डॉक्टर बनने का था, लेकिन वैष्णव परिवार से संबंध होने के नाते परिवार में चीरफाड़ की इजाजत नहीं थी। साथ ही पिता की मृत्यु ने गाँधीजी के जीवन पर प्रभाव डाला और परिवार के साधनों को भी तहस-नहस कर दिया। परिवार के एक दोस्त मावजी दवे ने सुझाव दिया कि अगर गाँधीजी विदेश जाकर बैरिस्टर की पढ़ाई पूरी करते हैं तो उन्हें उनके पिता का पद मिल जाएगा। ऐसे में गाँधीजी को आगे की शिक्षा पूरी करने के लिए इंग्लैंड जाना पड़ा। गाँधीजी 18 वर्ष की आयु में सितम्बर 1888 में इंग्लैंड के लिए रवाना हो गए।

www.neerajbooks.com

इंग्लैंड में बिताए वर्ष

4 सितम्बर, 1888 को मोहनदास यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन में कानून की पढ़ाई करने और बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैंड चले गये। भारत छोड़ते समय गाँधीजी ने अपनी माता को वचन दिया कि वह मांस, शराब और संकीर्ण विचारधारा को त्याग देंगे और उन्होंने इसका आजीवन पालन किया। गाँधीजी जब इंग्लैंड गये तब उन्होंने काला सूट, शर्ट और टाई पहनने के बजाए सफेद फलालैन का सूट पहना हुआ था। गाँधीजी लंदन में सबसे पहले विक्टोरिया होटल में रुके थे।

आरंभ में गाँधीजी के कुछ दिन काफी दुखदायी रहे। उनका मन वहाँ पर नहीं लगता था। गाँधीजी को जब तक इंग्लैंड में शाकाहारी रेस्तरां नहीं मिला वे लगभग भूखे रहे। कुछ दिनों के बाद गाँधीजी ने जेंटलमैन बनने का निश्चय किया। लंदन में फैशनेबल और महंगे सूट सिलाये और नृत्य की शिक्षा भी ली। उन्होंने सिल्की टोपी भी खरीदी, वायलिन बजाने की भी कोशिश की, लेकिन अफसल रहे। आत्म-निरीक्षण की उनकी आदत ने उसके मन को बदल दिया। अंग्रेज बनने के तीन माह के उनके प्रयास के विचार को छोड़कर उन्होंने फिजूलखर्ची के बजाए मितव्ययिता का मार्ग अपनाया। गाँधीजी ने अब अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना शुरू कर दिया। वह साधारण भोजन करते थे तथा लंदन में वे हर जगह पर पैदल चलकर जाते थे। गाँधीजी ने अपने द्वारा खर्च किए गए पैसे का हिसाब-किताब रखना भी शुरू कर दिया।

गाँधीजी लंदन में वेजीटेरियन सोसायटी में शामिल हुए और बाद में उसकी कार्यकारी परिषद् में शामिल हो गए। महात्मा गाँधी ने 'वेजीटेरियन पत्रिका के लिए कई लेख भी लिखे। इंग्लैंड में गाँधीजी ने बाइबिल तथा भगवद्गीता का अध्ययन किया। बुद्ध के जीवन पर आधारित लाइट ऑफ एशिया का अध्ययन किया साथ ही कार्लाइल के 'हीरोज एंड हीरो वर्शिप' में इस्लाम के पैगम्बर का भी अध्ययन किया। यहीं से गाँधीजी के जीवन में सभी धर्मों के प्रति समान दृष्टिकोण रच-बस गया था। घृणा के बदले प्यार का विचार, बुराई की जगह अच्छाई ने गाँधीजी के प्रभावशली दिमाग पर इसकी व्यापक छाप छोड़ी।

गाँधीजी ने लंदन में मैट्रिक की परीक्षा ग्रहण की और पास हो गये। इसी समय गाँधीजी ने कानून के अध्ययन में प्रगति की और 1888 में इंनर टैम्पल में दाखिला लिया। गाँधीजी ने सितंबर 1888 से जून 1891 तक लंदन में वकालत की पढ़ाई पूरी की। 10 जून 1891 को गाँधीजी को बार में बैरिस्टर के रूप में भर्ती किया गया तथा 11 जून 1891 को उच्च न्यायालय में नामांकित किया गया। 12 जून को गाँधीजी भारत वापस लौट आए। गाँधीजी के इंग्लैंड के तीन वर्ष काफी सुखद रहे।

दक्षिण अफ्रीका में संघर्ष

1891 में वकालत की पढ़ाई पूरी करने के बाद गाँधीजी बंबई पहुँचे तो उन्हें पता चला कि उनकी माँ की मृत्यु हो चुकी थी। गाँधीजी ने बंबई में जाकर वकालत करने का फैसला किया, लेकिन वह बंबई में खुद को स्थापित करने में असफल रहे और वापस राजकोट लौट आए। गाँधीजी राजकोट में भी खुद को स्थापित न कर पाए। 1893 में महात्मा गाँधी को दादा अब्दुल्ला ने दक्षिण अफ्रीका में दादा अब्दुल्ला एंड कंपनी का केस लड़ने का प्रस्ताव दिया, जिसके बाद वे एक साल के कॉन्ट्रेक्ट पर दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी को भारतीय होने के कारण भेदभाव का सामना करना पड़ा। गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों को नस्लीय भेदभाव का शिकार होते देखा। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को कुली या समिस कहा जाता था। गाँधीजी भारत से डरबन पहुँचे और 7 जून 1893 को प्रीटोरिया जाने के लिए ट्रेन पर चढ़े। गाँधीजी के पास प्रथम श्रेणी का टिकट था। प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद उन्हें कोच में अपमानित होना पड़ा। ट्रेन जब पीटरमारिट्जबर्ग पहुँचने वाली थी तो उन्हें थर्ड क्लास वाले डिब्बे में जाने के लिए कहा गया, लेकिन गाँधीजी के द्वारा इनकार किए जाने पर उन्हें जबरदस्ती पीटरमारिट्जबर्ग स्टेशन पर धक्का देकर उतार दिया गया। गाँधीजी के सामान को ट्रेन के बाहर फेंक दिया गया। गाँधीजी ने ट्रेन के पायदान पर बैठकर अपना सफर पूरा किया। इस घटना ने गाँधीजी को काफी आहत किया था। बता दें कि उस समय फर्स्ट क्लास कंपार्टमेंट में सिर्फ श्वेत लोग (गोरे) ही सफर कर सकते थे।

गाँधीजी में सामाजिक न्याय की भावना दक्षिण अफ्रीका में क्रूरता के व्यक्तिगत अनुभव से जागी थी। गाँधीजी के साथ दक्षिण अफ्रीका में घटित घटनाओं ने उन्हें वहाँ पर सत्याग्रह करने को मजबूर किया। सत्याग्रह अर्थात् अन्याय के खिलाफ शांतिपूर्वक लड़ना। गाँधीजी ने भारतीय प्रवासियों की देखभाल के लिए एक संघ के गठन करने का सुझाव दिया।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों को रहने के लिए ट्रांसवाल में स्थित नेटाल क्षेत्र दिया गया था, जो स्थान रहने की दृष्टि से उपयुक्त नहीं था। न ही भारतीय लोगों को मत देने का अधिकार था। सरकार की विशेष अनुमति के बिना रात के 9 बजे के बाद भारतीयों को फुटपाथ पर चलने की भी आज्ञा नहीं थी।

गाँधीजी जिस विशेष केस के लिए दक्षिण अफ्रीका गए थे उस केस को सुलझाकर जब वे भारत वापस आने की तैयारी कर रहे थे। उसी समय वहाँ की सरकार ने एक ऐसा विधेयक पास किया, जिसमें भारतीय समुदाय के लोगों का मताधिकार समाप्त कर दिया जाएगा। गाँधीजी वहाँ पर भारतीय लोगों के आग्रह पर एक महीना रुककर बिल का विरोध करने को तैयार हो गये। गाँधीजी ने एक लिखित ज्ञापन, जिस पर 10000 भारतीयों के हस्ताक्षर थे, उसके प्रति ब्रिटेन के राज्य सचिव को भेजी। ब्रिटिश सरकार के हस्तक्षेप से ये बिल पास नहीं हो पाया, लेकिन बाद में दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने बिल को पुन: संशोधित करके पास कर दिया। गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका में सेवा करने के साथ ही कुछ

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समय के लिए 1896 में भारत वापस आए और यहाँ पर जब प्लेग फैला तो राजकोट में रहकर लोगों की सेवा की।

1896 में ही गाँधीजी को नेटाल के भारतीय समुदाय द्वारा भेजे गए तत्काल टेलीग्राम के कारण वापस डरबन जाना पड़ा। नवंबर 1896 में गाँधीजी पुनः अपने परिवार के साथ दक्षिण अफ्रीका गए। अपनी दक्षिण अफ्रीका की यात्रा के बाद गाँधीजी में अद्भुत बदलाव आया। गाँधीजी एक अंग्रेजी बैरिस्टर की तरह जीवन व्यतीत करने लगे थे, लेकिन साथ ही मितव्ययिता को अपने जीवन में स्थान देने लगे। गाँधीजी ने जीवन जीने की कला सीखी। वह अपना कपड़ा खुद सिलने लगे, बाल खुद काटते तथा साफ-सफाई भी करते थे। इसके अलावा वे लोगों की सेवा के लिए समय निकाल लेते। वे प्रतिदिन दो घंटे का समय एक चैरिटेबल अस्पताल को देते थे, जहाँ वे एक कंपाउंडर के तौर पर काम करते थे।

जब 1899 में बोअर युद्ध छिड़ा, उस समय तो गाँधीजी ने भारतीयों की एक एंबुलैंस टुकड़ी बनाकर स्वयंसेवकों के रूप में अपनी अमूल्य सेवाएँ दीं। 1901 में युद्ध समाप्ति के साथ ही गाँधीजी ने भारत वापसी का मन बना लिया था, वे भारत लौटे। सबसे पहले कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सभा में शामिल हुए। गाँधीजी भारत में रहना चाहते थे। बंबई में वकालत करने की कोशिश की लेकिन उसी समय गाँधीजी को पुनः दक्षिण अफ्रीका बुला लिया गया। गाँधीजी को दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की समस्याओं को जोसेफ चैम्बरलेन के सामने रखने के लिए बुलाया गया था, भारतीयों की समस्याओं को लेकर गाँधीजी चैम्बरलेन से मिले, किंतु बाद में उन्हें निराशा ही हाथ लगी। इसके बाद गाँधीजी ने जोहान्सबर्ग में रहकर वहाँ के सुप्रीम कोर्ट में वकालत में प्रवेश लिया। यहाँ रहकर उन्होंने अन्याय के खिलाफ युद्ध लड़ा।

इंडियन ओपीनियन का वित्त पोषण–'इंडियन ओपीनियन' महात्मा गाँधी द्वारा 1904 में शुरू किया गया एक समाचार पत्र था। यह दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के लिए नस्लीय भेदभाव और नागरिक अधिकारों के लिए लड़ने के लिए गाँधी और नेटाल भारतीय कांग्रेस के नेतृत्व में एक राजनीतिक आंदोलन के प्रकाशन का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण था। 'इंडियन ओपीनियन' ने विशेष रूप से उन खराब परिस्थितियों पर प्रकाश डाला, जिसके तहत गिरमिटिया मजदूरों ने काम किया। 'इंडियन ओपीनियन' के संपादक के रूप में श्री एम.एच. नजर ने काम किया तथा अपनी पूँजी का एक बड़ा हिस्सा भी इस पत्रिका के लिए दिया।

गाँधीजी ने सुबह उठते ही गीता पढ़ने के नियम को अपने जीवन में अपनाया। गीता के बाद रस्किन की पुस्तक 'अन टु दी लास्ट' का भी उन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। गाँधीजी ने अफ्रीका में सबसे पहले फिनिक्स आश्रम की स्थापना की। इसके बाद उन्होंने एक आदर्श कालोनी स्थापित की, जिसका नाम 'टालस्टॉय फार्म' रखा। कुछ समय के बाद ट्रांसवाल की सरकार ने एक कानून बनाने की घोषणा की थी, जिसके अंतर्गत आठ वर्ष की आयु से अधिक के ही भारतीय को अपना पंजीकरण करवाना होगा। उनकी अंगुलियों के निशान लिए जाएँगे और उन्हें प्रमाण लेकर हमेशा अपने पास रखना होगा। गाँधीजी ने लोगों के साथ मिलकर इसका विरोध किया तो उन्हें सत्याग्रहियों के साथ दो महीने के लिए जेल में भेज दिया गया। गाँधीजी के जेल से छूटने के बाद जोहान्सबर्ग में 16 अगस्त 1908 को विशाल सभा हुई और काले कानून के विरोध में पंजीकरण पत्रों की होली जलायी गयी। गाँधीजी को फिर गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। गाँधीजी दक्षिण अफ्रीका में तीन बार जेल गए। जनवरी 1914 में भारतीयों की मुख्य माँगों को मान लिया गया और गाँधीजी के साथ स्मट्स का एक औपबंधिक समझौता हुआ। वर्ष 1914 में गोखले जी की प्रार्थना पर गाँधीजी भारत वापस लौट आए।

भारत में संघर्ष

9 जनवरी, 1915 के दिन गाँधीजी ने भारत की धरती पर अपने परिवार के साथ पैर रखा। अपार जनसमूह उनके स्वागत के लिए उमड़ पड़ा। गाँधीजी को गोखले ने सुझाव दिया कि वे देश की परिस्थितियों को समझें। इस प्रकार देश के हालातों को समझने के लिए गाँधीजी ने भारत भ्रमण करने की योजना बनायी। एक साल भारत भर में घूमने के बाद मई 1915 में अहमदाबाद के पास कोचरब में अपना आश्रम स्थापित किया, लेकिन वहाँ पर प्लेग फैल जाने के कारण साबरमती क्षेत्र में अपना आश्रम स्थापित किया।

गाँधीजी का प्रथम सत्याग्रह बिहार के चंपारण में हुआ जहाँ पर अंग्रेज बागान मालिकों ने चंपारण के किसानों से एक अनुबंध कर लिया था, जिसमें उन्हें नील की खेती करना अनिवार्य था। महात्मा गाँधी ने अंग्रेजों के इस अत्याचार से चंपारण के किसानों का उद्धार कराया।

खेड़ा में गाँधीजी द्वारा अपने प्रथम वास्तविक संघर्ष की शुरुआत की गयी। खेड़ा सत्याग्रह गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों का अंग्रेज सरकार की कर वसूली के विरुद्ध एक सत्याग्रह था।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद खिलाफत आंदोलन

खिलाफत आंदोलन 1919 से 1922 के मध्य भारत में मुख्य रूप से मुस्लिम बहुसंख्यक वर्ग द्वारा चलाया गया राजनीतिक-धार्मिक आंदोलन था। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य मुस्लिमों के मुखिया माने जाने वाले टर्की के खलीफा के पद की पुनः स्थापना कराने के लिए ब्रिटिश सरकार पर दबाव डालना था। गाँधीजी खिलाफत आंदोलन को समर्थन देकर हिंदू-मुस्लिम एकता को स्थापित करना चाहते थे, परंतु अपेक्षित सफलता नहीं मिली।

असहयोग आंदोलन

असहयोग आंदोलन महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलाया जाने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण आंदोलन था। गाँधीजी ने एक अगस्त 1920 को असहयोग आंदोलन शुरू किया था। अंग्रेजों द्वारा प्रस्तावित

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

अन्यायपूर्ण कानूनों तथा रोलेट एक्ट के विरोध में देशव्यापी अहिंसक आंदोलन था। जैसे ही इस विधेयक की घोषणा की गई, वैसे ही गाँधीजी ने अंग्रेजों के विरुद्ध सविनय अवज्ञा शुरू करने का आह्वान किया। अंग्रेजों ने बलपूर्वक साधनों के द्वारा आंदोलन को दबाना शुरू किया। रौलट एक्ट, जलियाँवाला बाग हत्याकांड और पंजाब में मार्शल लॉ के कारण देशी लोगों का ब्रिटिश सरकार से भरोसा टूट गया।

गाँधीजी के असहयोग की अवधारणा बहुत लोकप्रिय हुई। लोगों ने सरकारी नौकरियों को छोड़ दिया, विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई, विद्यार्थियों ने अंग्रेजी स्कूल-कॉलेजों का बहिष्कार किया। जब यह आंदोलन अपनी चरम सीमा पर था, उसी समय फरवरी 1922 में किसानों के समूह ने संयुक्त प्रांत के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा में एक पुलिस थाने पर आक्रमण कर उसमें आग लगा दी। इस अग्निकांड में कई पुलिस वालों की जान चली गयी। हिंसा की इस कार्यवाही के बाद गाँधीजी ने यह आंदोलन तत्काल वापस ले लिया। गाँधीजी को मार्च 1922 में राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया और राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया और उन्हें दो साल की सजा दी गई।

साइमन कमीशन और नमक सत्याग्रह

साइमन आयोग सात ब्रिटिश सांसदों का समूह था, जिसका गठन भारत में संवैधानिक सुधारों के अध्ययन के लिए किया गया था। भारत में इस कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया क्योंकि इसमें कोई भी भारतीय सदस्य नहीं था। 3 फरवरी, 1928 को कमीशन भारत आया। भारतीय आंदोलनकारियों ने साइमन कमीशन वापस जाओ के नारे लगाए और जमकर विरोध किया। गाँधीजी ने दिसंबर 1928 को कलकत्ता अधिवेशन में एक प्रस्ताव पारित किया, जिसमें ब्रिटिश सरकार से भारत को पूर्ण स्वराज दिलाने की माँग की, लेकिन अंग्रेज सरकार के द्वारा माँगों को मानने से इनकार कर दिया गया। इसी समय अंग्रेज सरकार ने भारतीयों पर नमक कर लगा दिया। गाँधीजी ने इसके विरोध में नमक सत्याग्रह आरंभ कर दिया और 12 मार्च को अपने अनुयायियों के साथ दांडी यात्रा शुरू की। 6 अप्रैल 1930 को उन्होंने नमक निकालकर नमक कानून को तोड़ा।

गोलमेज सम्मेलन

मार्च 1931 को गाँधी और इरविन के बीच एक समझौता हुआ और अंग्रेजों ने गाँधीजी को गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए इंग्लैंड आमंत्रित किया। गाँधीजी ने तीन गोलमेज सम्मेलनों में से दूसरे सम्मेलन में भाग लिया। वहाँ पर गाँधी ने भारत के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की माँग की, लेकिन ब्रिटिश सरकार ने गाँधीजी की माँगों को अस्वीकार कर दिया। 28 दिसंबर, 1931 को गाँधीजी लंदन से खाली हाथ बंबई पहुँचे। भारत आकर गाँधीजी ने वेलिंगटन (वायसराय) से मिलना चाहा, लेकिन वायसराय ने मिलने से मना कर दिया। अंततः मजबूर होकर गाँधीजी ने द्वितीय सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने की घोषणा की।

भारत छोड़ो आंदोलन

8 अगस्त, 1942 को महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान किया। गाँधीजी ने ग्वालिया टैंक मैदान में अपने भाषण में "करो या मरो" का आह्वान किया, जिसे अगस्त क्रांति के नाम से जाना जाता है। 9 अगस्त, 1947 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें पुणे स्थित आगा खान पैलेस में दो सालों तक नजरबंद रखा गया। 1943 के अंत तक भारत छोड़ो आंदोलन समाप्त हो गया और ब्रिटिश शासन ने भी यह संकेत दे दिया कि वे अब भारतीयों को सत्ता का हस्तांतरण कर देंगे।

स्वतंत्रता और भारत विभाजन

भारत की स्वतंत्रता और विभाजन का प्रस्ताव कैबिनेट मिशन के द्वारा 1946 को पेश किया गया। गाँधीजी ने विभाजन का विरोध किया, लेकिन कांग्रेस ने उसे स्वीकार कर लिया था। सरदार पटेल के मनाने पर गाँधीजी ने अनिच्छा से इसे अपनी सहमति दी। 15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हो गया। भारत की स्वतंत्रता के बाद गाँधीजी ने हिंदू और मुसलमानों में शांति और एकता स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित किया।

महात्मा गाँधी की हत्या

30 जनवरी, 1948 की शाम नई दिल्ली स्थित बिड़ला भवन में महात्मा गाँधीजी की गोली मारकर हत्या कर दी गई। उन्हें एक कट्टरपंथी नाथूराम गोडसे द्वारा गोली मारी गयी थी। वे गाँधी जी के पाकिस्तान विभाजन के भुगतान देकर भारत को कमजोर करने के लिए गाँधी की जिम्मेदार मानते थे। इस तरह 30 जनवरी, 1948 को गाँधी युग की समाप्ति हुई। महात्मा गाँधी की हत्या 78 वर्ष की आयु में हुई। उनके हत्यारे नाथूराम विनायक गोडसे, पुणे महाराष्ट्र के एक चितपावन ब्राह्मण एक हिन्दू राष्ट्रवादी थे। लाल किले में चले मुकदमे में न्यायाधीश आत्मचरण की अदालत ने नाथूराम गोडसे और नारायण आप्टे को फाँसी की सजा सुनाई। अदालत में गोडसे ने स्वीकार किया कि उन्होंने गाँधी को मारा।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. गाँधी के बचपन और इंग्लैंड में उनके द्वारा बिताए गए वर्षों का संक्षेप में उल्लेख करें।

उत्तर–महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को काठियावाड़ के पोरबंदर में एक बहुत ही धार्मिक परिवार में हुआ था। इनके पिताजी का नाम करमचंद गाँधी और माता का नाम पुतलीबाई था। महात्मा गाँधी का असली नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था और वह अपने तीन भाईयों में सबसे छोटे थे। गाँधीजी के पिता ब्रिटिश शासन काल में पोरबंदर और राजकोट के दीवान थे। गाँधीजी की माता पुतलीबाई एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। इनका सीधा-सरल जीवन इनकी माँ से प्रेरित था। गाँधीजी का पालन-पोषण

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com